अ

अकरणीय - अमानवीयता ही हर मनुष्य के लिए अकरणीय है।

अकर्तव्य - प्रत्येक स्तर पर स्थापित संबंध एवं संपर्क में निहित मूल्य, मानवीयतापूर्ण आशा व प्रत्याशा का निर्वाह न करना अथवा अमानवीयतापूर्वक आचरण व व्यवहार करना।

अकर्मणत्व - कर्म से मुक्ति पाने का प्रयास (आलस्य और प्रमाद)।

अकाल - ऋतु असंतुलन पीड़ा, समस्या।

अकर्तृत्व - भ्रम से निराकर्षण ही अकर्तृत्व है। जागृति पूर्वक किये जाने वाले सभी क्रियाकलाप ही अकर्तृत्व है जो समाधानकारी सुखकारी है।

अक्रूर - शाकाहारी शरीर रचना और शाकाहारी जीव व मानव।

अखण्ड - व्यापक वस्तु जड़-चैतन्य प्रकृति में पारगामी व पारदर्शी यही अखण्ड है। जिसका भाग-विभाग, खंड-विखंड, छेद-विच्छेद, संगठन-विघटन न हो- यही अखण्ड है। सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व में अखण्डता अविभाज्यता स्पष्ट है।

- तीनों काल में सर्वत्र विद्यमान, भाग-विभाग रहित सहज नित्य वर्तमान वैभव (यही व्यापक है, अखण्ड है)।

- मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था व आचरण में सामरस्यता-अखण्ड समाज और चारों अवस्था यथा-पदार्थ-प्राण-जीव और ज्ञानावस्था संपन्न धरती स्वयं अखण्ड। व्यापक अखण्ड है व्यापक वस्तु में हर धरती अखण्ड है। सहअस्तित्व में चार अवस्थाएं इस धरती में प्रकट है।

अखण्डता - परस्पर जागृत मानवों में अनन्यता ही अखंडता है।

अखण्ड राष्ट्र - मानवीय शिक्षा, संस्कार, राज्य व्यवस्था, संविधान व आचरण में सामरस्यता का वर्तमान।

अखण्ड समाज - मानवीयता पूर्ण मानव समाज परंपरा; क्रियापूर्णता व आचरण पूर्णता सहज प्रमाण सम्पन्न मानव परंपरा; मानवीय शिक्षा संविधान व्यवस्था आचरण सम्पन्न मानव परम्परा; समुदाय चेतना से मुक्त मानव चेतना संपन्न परंपरा; भ्रम से मुक्त जागृति सम्पन्न मानव परंपरा; व्यक्तिवादी, समुदायवादी व अवसरवादी प्रवृत्तियों से मुक्त सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्न मानव परंपरा; न्याय सत्यपूर्ण व्यवहार सहित मानव परम्परा; सर्वतोमुखी समाधान संपन्न शिक्षा संस्कार परम्परा; दश सोपानीय पाँच आयामी सहज व्यवस्था परम्परा; समाधान, समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज मानव परंपरा; मनाकार को साकार करना व मन:स्वस्थता सहज प्रमाण परम्परा।

- सहअस्तित्व, समाधान, अभय, समृद्धि पूर्णता।

- धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनीति सहज पालन, परिपालन में एक सूत्रता।

- मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था व आचरण में सामरस्यता।

अखण्डता में ओतप्रोत - व्यापक वस्तु में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सहज अविभाज्य वर्तमान।

- व्यापक वस्तु में सम्पृक्त नित्य क्रियाशील प्रकृति।

- नियम, नियंत्रण, संतुलन प्रमाण।

ई

ईप्सा - ऐषणा के प्रति पिपासा।

- प्राप्य के प्रति तीव्र इच्छा ही ईप्सा है।

ईप्सित - इच्छा के अनुरूप प्राप्त, प्राप्तियाँ।

ईक्षण - सहअस्तित्व में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म की पहचान।

- जीवन प्रकाश में द़ृश्य स्पष्ट होने हेतु किया गया क्रियाकलाप।

ईमानदारी - समझदारी के अनुरूप निर्णय लेने की और प्रस्तुत होने करने की क्रिया प्रणाली।

ईर्ष्या - दूसरों के उन्नति विरोधी मानसिकता, द्वेष, भ्रमित मानसिकता।

ईश्वर - ऐश्वर्य संपन्न सर्वत्र विद्यमान सर्व सुलभता की पहचान।

उ

उचित - मानवीयता एवं अतिमानवीयता के पोषण, संरक्षण, उन्नति के लिए उपादेयी आचरण, व्यवहार, कार्य।

उत्कृष्ट - उत्थान के लिए श्रेष्ठ, अनिवार्य एवं आवश्यक प्रक्रिया।

- मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना पूर्वक जीना।

उत्कंठा - गुणात्मक परिवर्तन के लिए मानव में तीव्र इच्छा।

- क्रियाशील में कर्माभ्यास।

- वस्तु मूल्यानुभूति सहज अभ्यास।

- कर्माभ्यास अन्वेषण, शिक्षण, प्रशिक्षण है जिसकी चरितार्थता उत्पादन है फलत: समृद्धि है।